International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 11 No.6 July-Aug 2024

इंदिरा गोस्वामी के उपन्यासों में नारी की स्थिति

डॉ. शैलजा धोंडीराम गवळी
महाबळेश्वर
Corresponding Author- डॉ. शैलजा धोंडीराम गवळी
DOI- 10.5281/zenodo.14228375

सारांश:

भिन्न जात-पात,धर्म-संप्रदाय से घिरे भारत जैसे देश में उच्च वर्ण की किसी नारी द्वारा भोगे हुए लिंग वैषम्य किसी निम्नवर्गीय नारी द्वारा भोगे लिंग वैषम्य वाली अवस्था से और अधिक कठोर और पीड़ादायक है। निम्नवर्गीय नारी की विभिन्न प्रकार के उपलब्धियों का स्वरूप उद्घाटन करते हुए अपनी प्रतिवादी कण्ठ को साहित्य का रूप देने वाले अनेकों साहित्यकारों में इंदिरा गोस्वामी भी प्रमुख है। उनके उपन्यासों में विधवा नारी के दुख- दैन्य पूर्ण जीवन गाथा का अत्यंत हृदय विदारक पूर्ण भाव प्रतिफलित हुए है। उन्होंने इन कथाओं को वर्णित करने के लिए अपनी अलग ही एक दुःसाहसिक वर्णन शैली का प्रयोग किया है।

इंदिरा गोस्वामी की उपन्यास 'दक्षिणी कामरूप की गाथा' और 'नीलकंठी ब्रज' नामक दोनों उपन्यासों में क्रम से 'गिरिबाला' और 'सौदामिनी' पात्र में हमें रूढ़िवादी समाज व्यवस्था से जूझती हुई साहसिक नारी का स्वर सुनाई पड़ती है।

प्रस्तावना:

'दक्षिणी कामरूप की गाथा' उपन्यास में 'गिरिबाला' जो मूल चरित्र है वह एक विधवा नारी है। ब्राह्मन्यवादी सामाजिक विधि-विधान को पूरी तरह से पालन करने वाले स्वतंत्रता से पूर्व ब्रिटिश जमाने की उस समाज व्यवस्था में 'गिरिबाला' उस समाज की हर एक नियम कानून को पूरी तरह से पालन करके ही जीवित रह सकती थी। लेखिका के अनुसार उस तरह से जीने से बहतर मर जाना है क्योंकि उसमें उनकी किसी भी प्रकार की व्यक्तिगत स्वतंत्रता से वह वंचित थी। वह भले ही एक विधवा है पर है युवती,उनकी शारीरिक- मानसिक भूख विद्यमान है। वह अपने मन और शरीर को एक मृत स्वामी की स्मृति में समर्पण करके अपनी जीवित सत्ता को जीते जी समाधिस्थ नहीं कर सकती। वह अपने जीवन की गति को अवरुद्ध करना नहीं चाहती थी। 'मार्क' नाम के विदेशी युवक के साथ गढ़ रहे उनकी आंतरिक संपर्क को समाज महापाप की दृष्टिकोण से देखते हैं, क्योंकि वह एक विधवा है । ब्राह्मण समाज में कोई ब्राह्मण विधवा का दूसरी बार किसी अन्य पुरुष के प्रति लगाव होना महापाप समझा जाता है। उसी महापाप के खण्डन हेतु एक पुरोहित दल के साथ बाँस, घास- फूस से निर्मित एक झोपड़ी में बकरी समेत गिरिबाला को रखा जाता है। यज्ञ समाप्त होने के बाद नियम अनुसार स्त्री को बाहर आना होता है और उस झोपड़ी को आग लगा दिया जाता है जहां बकरी को जलाया जाता है। ऐसा करके पाप खंडित किया जाता है। गिरिबाला के साथ भी वह सब कुछ नियमानुसार हुआ। यज्ञ समाप्त होने के बाद उनको बाहर आने को कहा गया,उन्होंने अंदर से आवाज देकर कहां कि आग लगने के बाद वह निकल आएगी। पर आग लगने के बाद भी वह नहीं आयी। चारों ओर इंसान के मांस जलने का गन्ध फैलने लगा। गिरिबाला का यह सिद्धांत उस पुरुष प्रधान समाज के प्रति एक बड़ा तमाचा था जो स्वामी की मृत्यु के बाद स्त्री को भी उसी चिता में जला देना चाहिए जैसा विचार रखते है। वह अपनी इस आत्मघाती सिद्धांत से यह संदेश देना चाहा है कि उनके देह-मन-सत्ता एक जीवित पुरुष के प्रति ही आसक्त है। मृत स्वामी के धूसर स्मृति के नाम पर वह अपने जीवन को तबाह नहीं कर सकती। निश्चय ही यह एक नारी की प्रतिवाद की अन्य एक भाषा है। गिरिबाला ने 'सती' होकर जीना पसंद नहीं किया। वह समाज के अनुसार 'असती', 'व्यभिचारी' होकर भी तथाकथित 'सती' स्त्री के अस्तित्व तथा परिचय से मुक्ति पाने के लिए आत्महत्या का पथ चुनती है।

ब्रज धाम की विधवा नारियों के असहाय जीवन के छवि को जैसा का तैसा वर्णन करके लिखा हुआ उपन्यास का नाम है 'नीलकंठी ब्रज'। इस उपन्यास में असंख्य विधवाओं के बीच जो अपनी अलग पहचान बनाने में सक्षम हुई है, वह है 'सौदामिनी' नामक चरित्र। सौदामिनी उम्र,शिक्षा-दीक्षा,सामाजिक स्थान आदि सभी दिशाओं को समेटे ब्रज धाम में आकर मुक्ति कामना करने वाली सभी विधवाओं से बिल्कुल अलग है। 'दक्षिणी कामरूप की गाथा' की 'गिरिबाला' की तरह ही 'सौदामिनी' जो एक विधवा है, उनको भी एक क्रिस्टियन युवक से प्रेम हो गया था और उसी

से मुक्ति दिलाने के लिए उनके माता-पिता ने उनको लेकर आया है ईश्वर की भूमि ब्रजधाम में। पिता राय चौधरी ने सोचा था कि ब्रज धाम में उनके द्वारा चलाए जा रहे अस्पताल में अनेकों असहाय रोगियों की चिकित्सा में सौदामिनी का मन रमने लगेगा,पर वास्तव में वह हो नहीं सका। ब्रज धाम में रहकर भी सौदामिनी बार-बार यह अनुभव करती है कि वह उस मिट्टी से जुड़ी हुई है जिसका देह-मन धूल और मिट्टी के गंध से संबंधित है। जिसके देह-मन में जीवनगत आशा-आकांक्षाओं का अंत नहीं हुआ है। पिता के सहयोग से अंत में उस क्रिस्टियन युवक से उनका भले ही मिलन हुआ पर वह आत्मग्लानि के अंधकार से अपने आप को मुक्ति नहीं दिला सकी। क्रिस्टियन युवक के सामने आत्मसमर्पण कर वह आध्यात्मिक पराजय स्वीकार नहीं कर सकती, उसके विपरीत मृत स्वामी के वेदनादायक स्मृतियों के आश्रय में भी वह लौटकर नहीं जा सकती। इस प्रकार की मानसिक अस्थिरता के बीच वह आत्महत्या कर लेती है। 'सौदामिनी' की मृत्यु में 'गिरिबाला' की मृत्यु के जैसा प्रतिवादी स्वर प्रकट नहीं हुआ है। सौदामिनी के मन एक ऐसी स्थिति में जाकर रुकते हैं जहां वह सही क्या है गलत क्या है कुछ भी निर्णय नहीं कर पाती है और आत्महत्या का पथ चुनती है। पिता ने सौदामिनी को सहज सरल जीवन से बहुत दूर एक आध्यात्मिक जगत में ले आकर चलने के लिए बाध्य करना ही नहीं बल्कि पहले जिस युवक से दूर करके रखते थे उसी युवक से बाद में मिलने के लिए सहयोग करके और अधिक उनके मन को विध्वस्त कर दिया था। जिसके चलते सौदामिनी के लिए करे तो क्या करें जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई । ऊपर ही ऊपर देखे तो डॉ. राय चौधरी जो सौदामिनी के पिता है वह एक उदार दायित्वशील व्यक्ति दिखाई पड़ते हैं पर ध्यान से देखने से पता चलता है कि उनके व्यक्तिगत रूचि के अनुसार ही सौदामिनी का जीवन परिचालित हुए है। जंहा आदि से अंत तक सौदामिनी माता पिता के बातों को मानकर, उनको ख़ुश रखने की कोशिश में ही अपने जीवन की रुचि को भुला देती है और एक अशान्तिपूर्ण जीवन बिताने लगती है। उनकी मृत्यु उनके माता-पिता के संस्कारपूर्ण आचरण के विरुद्ध एक मौन प्रतिवाद जैसा बनकर रह गया है। 'नीलकंठी ब्रज' के डॉ. राय चौधरी के चरित्र में पुरुष तांत्रिक उस व्यवस्था का प्रतिफलन हुआ है जहां एक स्त्री के हर एक सिद्धांत के पीछे एक पुरुष की अपनी रुचि अंतर्निहित होना दिखाई पड़ते हैं।

निष्कर्ष:

उपर्युक्त दोनों ही उपन्यास में इंदिरा गोस्वामी ने नारी चरित्र के यंत्रनामय तथा मजबूर जीवन जीते हुए भी कैसे अपने विचार को पुरुष तांत्रिक समाज व्यवस्था के सामने रखने में सफल हो सकते है वह दिखाया है। स्त्री अपने आप को पराजित घोषित न करते हुए जीवन को अन्य एक शैली में किस प्रकार जी कर एक अन्य आयाम दे सकती है, वह दिखाया है ।

डॉ. शैलजा धोंडीराम गवळी

दोनों ही उपन्यास में 'गिरिबाला' और 'सौदामिनी' समाज के अधिकार के प्रति विद्रोही हो उठती है पर दोनों ही चरित्र को आत्महत्या के पथ पर लेखिका द्वारा धकेल दिया जाता है। आत्महत्या को लेखिका ने यहां प्रतिवाद के रूप में इस्तेमाल किया है। वह अपने इन चरितों के जरिए यह संदेश देना चाहा है कि पुरूष भले ही कितने ही क्रूर हो,व्यवस्था चाहे कितने भी कठोर हो स्त्री की हक़ को कोई छीन नहीं सकते। स्त्री चाहे तो प्रतिवाद कर सकती है, अपने अधिकार को प्राप्त कर सकती है। भारत जैसे देश में एक ओर नारी को देवी मानकर पूजा की जाती है और उसी नारी को शोषण करते वक़्त उनके प्रति थोड़ा भी रहम नहीं दिखाते है। मूलतः नारी को कभी हार न मानने वाले विचार के हक़दार बनाना चाहती है लेखिका। वह मरके भी जो सही नहीं है उसके ख़िलाफ़ आवाज बुलंद कर जाती है। लेखिका के अनुसार जो चरित्र इन दो नारी पात्रों में है वह हर एक भारतीय नारी में होना चाहिए। कभी किसी नारी को झुकना नहीं चाहिए, चाहे उनके सामने कोई कठोर परिस्थिति हो या कोई बलशाली पुरुष कभी भी ख़ुदको कमज़ोर नहीं समझना चाहिए। इस प्रकार की नारी चरित्र का निर्माण करके इंदिरा जी ने यह भी दिखाया है कि मानसिक तौर पर वह खुद भी एक सशक्त नारी है।

सहायक ग्रंथ

1. उपन्यास स्वरूप और संवेदना, राजेंद्र यादव, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993
2. समकालीन हिंदी कथा लेखिकाएँ, डॉ. रामकली सर्राफ, अनुराग प्रकाशन,वाराणसी, 1988
3. स्त्रीत्ववादी विमर्श: समाज और साहित्य, क्षमा शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
4. समकालीन हिंदी उपन्यास समय से साक्षात्कार, डॉ. विजयलक्ष्मी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
5. नीलकंठी ब्रज, इंदिरा गोस्वामी, अनुवाद- दिनेश द्विवेदी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2010
6. दक्षिणी कामरूप की गाथा, इंदिरा गोस्वामी, हिंदी अनुवाद- श्रवण कुमार, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 1997

पत्रिका:

1. गरियसी, मासिक पत्रिका, फेब्रुवारी, 2012